एक आस्वादक की नजर

कृष्ण खन्ना, रामकुमार, वीरेंद्र कुमार एक पार्टी में (1967 का चित्र)

कृष्णन, जहांगीर सबावाला, बीरेन डे (1960 का चित्र)

रिचर्ड बार्थोलोम्यू (खड़े हुए), रति व पाब्लो अल्मोड़ा में (1959 का चित्र)

कला आलोचक रिचर्ड बार्थोलोम्यू एक सच्चे फोटोग्राफर भी हैं। बार्थोलोम्यू की तस्वीरों में प्रकृति, आम लोग, शहरी लैंडस्केप के अलावा कई कलाकार भी हैं जिनकी आत्मीय और दुर्लभ छवियां उन्होंने अंकित की हैं। दिल्ली में उनकी तस्वीरों की प्रदर्शनी कला-रसिकों के लिए कई आयामों से महत्वपूर्ण है।

रिचर्ड बार्थोलोम्यू को आमतौर पर आधुनिक भारतीय कला के आलोचक के रूप में जाना जाता है। आजादी के आस-पास भारतीय कला जगत में जो स्फुरण देखने में आया और पांचवें-छठे दशक में जिसने परिपक्वता प्राप्त की उस दौर के कई कलाकारों के काम पर बार्थोलोम्यू ने अपनी कलम चलाई। बार्थोलोम्यू के कला संबंधी लेखन ने जल्द ही लोगों का ध्यान खींचा और तत्कालीन कला आलोचना के परिदृश्य में उनकी उपस्थिति अपरिहार्य हो उठी। उस समय के कलाकार, जो तब युवा थे आज वरिष्ठ और वयोवृद्ध हो चुके हैं और आज उन्हें हम आधुनिक भारतीय कला के अत्यंत महत्वपूर्ण हस्ताक्षरों के रूप में जानते हैं। यह कहना शायद अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अपने कई आधुनिक कलाकारों के बारे में हमारी जो समझ बनी है उसमें किसी हद तक बार्थोलोम्यू द्वारा लिखी गई आलोचनाएं भी सहायक रही हैं।

लेकिन यह बार्थोलोम्यू का समग्र रूप नहीं है। वास्तव में वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कला आलोचक होने के साथ-साथ वह एक सजग फोटोग्राफर भी थे। तीन साल पूर्व उनके बेटे पाब्लो बार्थोलोम्यू, जो खुद एक जाने-माने फोटोग्राफर हैं ने बार्थोलोम्यू द्वारा खींचे गए चित्रों के करीब सत्रह हजार निगेटिव पाए। इन निगेटिवों में से चुनिंदा दुर्लभ चित्रों की एक प्रदर्शनी फोटोइंक, फैज रोड, झंडेवालान, नई दिल्ली में 28 फरवरी तक चलेगी। इस तरह बीते वर्ष मई में पहली बार दुर्लभ चित्रों को न्यूयार्क के सीपिया इंटरनेशनल में प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी को नाम दिया गया 'ए क्रिटिक्स आई' अर्थात आलोचक की आंख। यही प्रदर्शनी इन दिनों नई दिल्ली स्थित फोटोइंक कला दीर्घा में चल रही है। इस अवसर पर 'ए क्रिटिक्स आई' शीर्षक से एक किताब भी प्रकाशित की गई है।

बार्थोलोम्यू मूलतः बर्मी थे। उनका जन्म 1926 में बर्मा में हुआ था, लेकिन दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जब जापानियों ने बर्मा पर कब्जा जमाना शुरू किया तब वह वहां से भारत आ गए। फिर तो यही उनका घर हो गया। उन्होंने नई दिल्ली स्थित सेंट स्टीफेंस कालेज से पढ़ाई की, छिटपुट रोजगार किए। दिल्ली में ही उनकी भेंट थियेटर कार्यकर्ता रति से हुई जो बाद में उनकी जीवनसंगिनी बनीं। यहीं उनकी दोनों संतानें-पाब्लो और रॉबिन पैदा हुईं।

अपने रोजगार के सिलसिले में बार्थोलोम्यू ने राजधानी के तिब्बती कला संग्रहालय और कुनिका कला केंद्र में भी काम किया। आगे चलकर उन्होंने समकालीन भारतीय कला की कई अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियां भी संयोजित कीं। 1985 में जब बार्थोलोम्यू का देहांत हुआ उस समय वह ललित कला अकादमी के सचिव के पद पर कार्यरत थे।

बार्थोलोम्यू का पूरा जीवन संघर्ष और सृजन से परिपूर्ण रहा। बकौल पाब्लो, उनके लिए पैसा हमेशा एक मुद्दा रहा। जब हम सयाने हुए यह पर्याप्त नहीं था। मेरे मां-पिता ने संघर्ष किया- कार नहीं थी और घर पर फोन नहीं था, लेकिन इन सब सीमाओं के बावजूद टाइपराइटर और कैमरे हमेशा रहे।

बार्थोलोम्यू के जीवन के उतार-चढ़ाव भरे दिन उनके फोटोग्राफों की दुनिया को महसूस करने और समझने में किंचित एक सूत्र साबित होते हैं। प्रदर्शनी में रखे गए चित्रों में उनके परिवार की, मित्र कलाकारों की, सड़कों-रास्तों की, यात्राओं की अनके छवियां हैं। कई व्यक्ति चित्र अर्थात पोर्ट्रेट भी। दृश्यों में अधिकतर शहरी हैं, लेकिन इन सभी चित्रों में एक खास एकांतिकता व्याप्त है। पारिवारिक चित्रों में से एक में बार्थोलोम्यू अपनी पत्नी रति और बेटे पाब्लो के साथ हैं। एक फोटोग्राफ जो खास तौर पर ध्यान खींचता है उसमें रति सफेद साड़ी पहन रही है और कंधे पर डालने के क्रम में आंचल हवा के जोर से उड़ता नजर आ रहा है। कुछ फोटोग्राफ बार्थोलोम्यू के दोनों बच्चों के भी हैं।

बार्थोलोम्यू के मित्र और परिचित कलाकारों के फोटोग्राफों में मकबूल फिदा हुसेन, फ्रांसिस न्यूटन सूजा, रामकुमार, वीरेन दे, कृष्ण खन्ना, भूपेन खक्कर, जहांगीर सबावाला आदि के फोटो शामिल हैं। इनमें से एक फोटो हुसेन का है जिसमें दुबले-पतले हुसेन बेतकल्लुफ अंदाज में फोन पर बातें करते नजर आ रहे हैं साथ ही अपने सिर के बाल की एक लट खींच रहे हैं। एक चित्र में रामकुमार अपने कैनवास के साथ बैठे नजर आ रहे हैं तो एक में सूजा की प्रखर मुद्रा अमिट हो गई है। बार्थोलोम्यू के कई फोटो में मानो समय के अवकाश को पकड़कर स्थिर कर दिया है। एक फोटो में जमीन पर कब्रिस्तान के कई स्मारक क्रूस हैं और ऊपर आकाश में काफी ऊंचाई पर उड़ता एक हवाई जहाज है। बीच में बस निरभ्र चुप्पी। एक फोटो में एक स्त्री शिशु यीशू को लिए मरियम का चित्र देख रही है और पास में पराम्बुलेटर पर बैठा उसका बच्चा उसकी ओर देख रहा है।......

कहा जा सकता है कि बार्थोलोम्यू के फोटोग्राफ न सिर्फ उनकी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि को दर्शाते हैं, बल्कि ये हमारे समय की कला का एक अत्यंत जरूरी विरासत हैं जिनका आधुनिक भारतीय कला के ऐतिहासिक संदर्भ में मूल्यांकन किया जाना शेष है।

धर्मेन्द्र सुशांत